पत्रिका

#AmbedkarHospital

20 वर्षीय युवक की बचाई गई जान, एसीआई के डॉक्टरों ने किया कमाल

हार्ट में था बड़ा छेद, पहली बार दो इंच के चीरे से ओपन हार्ट सर्जरी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायपुर. आंबेडकर अस्पताल स्थित एडवांस कार्डियक इंस्टीट्यूट के कार्डियो थोरेसिक एंड वेस्कुलर सर्जरी विभाग में पहली बार 2 इंच के चीरे लगाकर ओपन हार्ट सर्जरी की गई। जन्मजात हार्ट में बड़े छेद वाले 20 वर्षीय युवक की जान बचाई गई। इस सर्जरी को मिनिमली इनवेसिव कार्डियक सर्जरी कहा जाता है। एचओडी डॉ. कृष्णकांत साहू के नेतृत्व किसी सरकारी अस्पताल में पहली सर्जरी की गई। इस पद्धति में मरीज की छाती पर एक छोटा सा चीरा लगाकर सर्जरी की गई और मरीज जल्दी ठीक भी हो गया।

धमधा निवासी 20 वर्षीय युवक की सांस फूलने लगी व हाथ-पैरों में सुजन आने लगी। मरीज को मेडिसिन विभाग में भर्ती किया गया एवं जांच के उपरांत पता चला कि उनके हृदय में 4 बाई 3 सेमी का बड़ा सा छेद है। इसे मेडिकल भाषा में एट्रियल सेप्टल डिफेक्ट कहा जाता है। डॉ. साहू ने बताया कि ऐसी बीमारी का ऑपरेशन बचपन में ही हो जाना चाहिए। नहीं तो उम्र के साथ-साथ हृदय का कार्य (पंपिंग) कम होते जाता है। एक समय बाद हार्ट फेल्योर की नौबत आ जाती है, जैसा कि इस मरीज के साथ हुआ। मेडिसिन विभाग में इस मरीज का लगभग 10 दिनों तक एन्टीफेल्योर ट्रीटमेंट चला। उसके बाद मरीज को ऑपरेशन के लिए कार्डियक सर्जरी विभाग भेजा गया। वहां सफल सर्जरी होने से युवक की जान बच गई और सोमवार को डिस्चार्ज भी कर दिया गया।

सर्जरी टीम में ये भी शामिल

डॉ. विवेक वाधवा, डॉ. निशांत चंदेल, कार्डियक एनेस्थेटिस्ट डॉ. देवेन्द्र पांडे, परफ्यूजिनिस्ट बिकास महपात्रा एवं डिगेश्वर, टेक्नीशियन भूपेन्द्र, हरीश, निराकार, चेतन एवं सरिता, नर्सिंग स्टाफ ओटी राजेन्द्र, चोवा, मुनेष, नरेन्द्र एवं तेजेन्द्र, आईसीयू केयर किरण, जागृति, भावना एवं कुसुम शामिल रहे।

लगता है 20 सेमी का चीरा

सामान्य ओपन हार्ट सर्जरी में छाती की हड्डी स्टर्नम को काटना पड़ता है। इसमें लगभग 20 सेंटीमीटर का चीरा/कट लगता है। इस घाव को भरने में थोड़ा ज्यादा समय लगताहैं।मिनिमलीइन्वेसिव कार्डियक सर्जरी में हृदय और फेफड़ों के कार्य को बंद करने के लिए हार्ट लंग मशीन को पैरों के नसों (जांघ के नसों-फीमोरल आर्टरी एवं फीमोरल वेन) से जोड़ा जाता है। हार्ट के अंदर स्थित छेद को बंद करने के लिए दायें छाती में चौथे पसली के बीच में 2 इंच का चीरा लगाकर विशेष इंस्ट्रूमेंट (उपकरण) द्वारा हार्ट को खोला जाता है। इसके बाद छेद को विशेष प्रकार के कपड़े जिसको डेक्रॉन पैच कहा जाता है, से बंद किया जाता है।

12/03/2024 | Raipur City | Page : 4
Source : https://epaper.patrika.com/

नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Rajdhani - 12 Mar 2024 - 12 raj 4
epaper.navabharat.news

स्वास्थ्य

अम्बेडकर अस्पताल के हार्ट, चेस्ट और वैस्कुलर सर्जरी विभाग की सफलता

दो इंच के चीरे से 20 वर्षीय मरीज की ओपन हार्ट सर्जरी

छत्तीसगढ़ के शासकीय अस्पताल में इस तरह का पहला केस, मरीज के हृदय के भीतर बड़ा छेद हो गया था

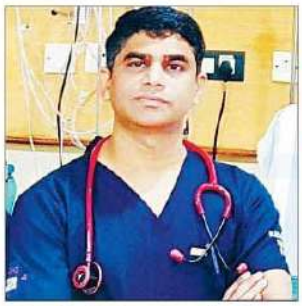

नवभारत रिपोर्टर । रायपुर।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय स्थित एडवांस कार्डियक इंस्टिट्यूट के हार्ट, चेस्ट और वैस्कुलर सर्जरी विभाग में मिनिमली इनवेसिव कार्डियक सर्जरी के माध्यम से मरीज की सफलतापूर्वक सर्जरी की गई। इस पद्धति में मरीज की छाती पर एक छोटा सा चीरा लगाकर सर्जिकल प्रकिया को अंजाम दिया गया। इस तरह की सर्जरी का प्रदेश के किसी सरकारी अस्पताल में यह पहला केस है। सर्जरी विभागाध्यक्ष डॉ. कृष्णकांत साहू के नेतृत्व में हुई।

धमधा निवासी 20 वर्षीय मरीज को दिल की जन्मजात बीमारी थी। मरीज को बीमारी के बारे में तब पता चला जब सांस फूलने लगी एवं हाथ पैरों में सूजन प्रारंभ हो गई। इस अवस्था को हार्ट फेल्योर कहा जाता है। मरीज को अम्बेडकर अस्पताल के मेडिसिन विभाग में भर्ती किया गया, तब जांच में पता चला कि उनके हृदय में 4 ×3 सेमी का बड़ा सा छेद है। जिसको मेडिकल भाषा में एट्रियल सेप्टल डिफेक्ट कहा जाता है। इस बीमारी की सर्जरी बचपन में ही हो जानी चाहिए थी। मेडिसिन विभाग में मरीज का लगभग 10 दिनों तक एन्टीफेल्योर ट्रीटमेंट चला। उसके बाद मरीज को कार्डियक सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. कृष्णकांत साहू के पास भेज दिया गया। डॉ. साहू ने बताया कि मरीज को कार्डियक सर्जरी विभाग में कुछ दिन और रखकर स्टेब्लाइज करके ओपन हार्ट सर्जरी कर हृदय में स्थित छेद को बंद कर दिया गया। इसे मिनिमली इन्वेसिव कार्डियक सर्जरी इसलिए कहा जाता है क्योंकि सामान्य ओपन हार्ट सर्जरी में छाती की हड्डी, जिसको स्टर्नम कहा जाता है, को काटकर ओपन हार्ट सर्जरी की प्रकिया की जाती है। जिसमें लगभग 20 सेंटीमीटर का चीरा/कट लगता है। इस घाव को भरने में थोड़ा ज्यादा समय लगता है।

इस सर्जरी की खासियत

मिनिमली इन्वेसिव कार्डियक सर्जरी (छोटे चीरे द्वारा ऑपरेशन) में हृदय और फेफड़ों के कार्य को बंद करने के लिए हार्ट लंग मशीन को पैरों के नसों (जांघ के नसों- फीमोरल आर्टरी एवं फीमोरल वेन) से जोड़ा जाता है एवं हार्ट के अंदर स्थित छेद को बंद करने के लिए दायीं छाती में चौथे पसली के बीच में 2 इंच का चीरा लगाकर विशेष उपकरण द्वारा हार्ट को खोला जाता है एवं छेद को विशेष प्रकार के कपड़े जिसको डेक्रॉन पैच कहा जाता है, से बंद किया जाता है। सर्जरी में डॉ. कृष्णकांत साहू के अलावा डॉ. विवेक वाधवा, डॉ. निशांत चंदेल, कार्डियक एनेस्थेटिस्ट डॉ. देवेन्द्र पांडे, परफ्युजनिस्ट बिकास महपात्रा एवं डिगेश्वर, टेक्नीशियन भूपेन्द्र, हरीश, निराकार, चेतन एवं सरिता, नर्सिंग स्टॉफ ओटी राजेन्द्र, चोवा, मुनेष, नरेन्द्र एवं तेजेन्द्र, आईसीयू केयर किरण, जागृति, भावना एवं कुसुम शामिल रहे।

TheHitavada
Raipur City Line | 2024-03-12 | Page- 8
ehitavada.com

BRAMH doctors perform MICS of critical patient

■ **Staff Reporter**
RAIPUR, Mar 11

ADDING to its exclusivity in successful critical surgeries, the Heart, Chest and Vascular Surgery Department of Dr B R Ambedkar Memorial Hospital (BRAMH) attained success with Minimally Invasive Cardiac Surgery (MICS) of a 20-year old critical patient.

The surgery was performed successfully with a two inch incision by a team of doctors under the leadership of Head of the Department Dr Krishnakant Sahu. With this achievement, Heart, Chest and Vascular Surgery Department of ACI has become the first government institute of the state wherein open heart surgery facility is available with MICS. Through this exclusive method, the surgical procedure is carried out by making a small incision on the patient's chest, enabling the patient recover very quickly and the scar is also very small.

Dr Krishnakant Sahu

The 20-year-old patient, a resident of Dhamdha was suffering from congenital heart disease. Though he was not aware of seriousness of the disease initially, after suffering from short of breath, and swelling in his hands and legs, the condition became serious. Generally, the symptoms termed as heart failure, the patient was admitted to the Medicine Department of BRAMH and after examination a big hole was detected in the heart called 'Atrial Septal Defect (ASD). Later, the patient underwent anti-failure treatment for about 10 days and referred to Head of the Department of Cardiac Surgery Dr Krishnakant Sahu for operation.

Patient successfully treated of hole in the heart through MICS with 2 inch incision.

Sharing his technical experience, Dr Krishnakant Sahu said that the patient was kept stable in the Cardiac Surgery Department for few days and the hole in his heart was closed by MICS. The patient recovered from the problem and returned to his normal life on the very next day.

Dr Sahu further said that normal open heart surgery requires cutting the chest bone called 'Sternum' with an incision or cut of about 20 centimeters. This wound takes a little more time to heal. However, in MISC small incisions is made and the heart-lung machine is connected to the veins of the thigh - femoral artery and femoral vein to stop the function of the heart and lungs. It is followed by the opening of the heart using a special instrument by making a 2-inch incision in the middle of the fourth rib in the right chest. Finally, the hole inside the heart is closed with a special type of cloth called 'Dacron Patch'. The patient is recovering well and will be discharge after five days.

Apart from HoD Dr Krishnakant Sahu, the team of doctors included Dr Vivek Wadhwa and Dr Nishant Chandel, Cardiac Anesthetist Dr Devendra Pandey, Perfusionist Bikash Mahapatra and Digeshwar, technicians Bhupendra, Harish, Nirakar, Chetan and Sarita and Tejendra and others.